मासिक दुर्गाष्टमी व्रत कथा (Masik Durgashtami Vrat Kath)

प्राचीन काल में, जब पृथ्वी पर असुरों की अत्यधिक बढ़ोतरी हो गई थी, तब वे स्वर्ग पर चढ़ाई करने लगे। असुरों ने स्वर्ग में आतंक मचाया और कई देवी-देवताओं का जीना भी दुश्वार कर दिया। उनमें से सबसे शक्तिशाली था महिषासुर (Mahishasura), जिसके उत्पात से स्वर्ग त्राहिमाम कर उठा। इस संकट को समाप्त करने के लिए देवों के देव महादेव भगवान शिव (Lord Shiva), पालनहार भगवान विष्णु (Lord Vishnu) और सृष्टिकर्ता भगवान ब्रह्मा (Lord Brahma) ने मिलकर एक शक्ति का निर्माण किया। इस दिव्य शक्ति का स्वरूप था देवी दुर्गा। सभी देवताओं ने अपनी-अपनी शक्तियां और हथियार मां दुर्गा को प्रदान किए। मां दुर्गा ने अद्वितीय शक्ति और साहस के साथ पृथ्वी पर अवतार लिया। दुर्गा मां ने अपने तेजस्वी रूप में असुरों का सामना किया। असुरों की सेना को नष्ट करते हुए, उन्होंने महिषासुर (Mahishasura) के साथ घोर संग्राम किया। अंततः, देवी दुर्गा ने महिषासुर का वध कर दिया और स्वर्ग को पुनः शांति दिलाई। इस महान विजय की स्मृति में दुर्गाष्टमी का पर्व मनाया जाता है, जो देवी दुर्गा की शक्ति, साहस और असुरों पर विजय का प्रतीक है। इस दिन, हम मां दुर्गा के अवतरण और उनके द्वारा की गई असुरों की पराजय का उत्सव मनाते हैं।

www.janbhakti.in